14 अगस्त 1998

सारथी

दोस्तो,

आजाद होने का अर्थ परिन्दे का आकाश में उड़ना, एक झंडा उठाना या सिर्फ पेट भरना नही है। बल्कि आजादी वह है जिसमें हम अपनी जिम्मेदारियों को समझों और निभायें ।

सारथी कलाकारों की खुद की संस्था है और सपनों को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है पुरानी पीढ़ी की अपेक्षा नई पीढ़ी सपनो को चुनौती के रुप मे देखती हैं । नवयुवक जोश से भरे होते है, उनमें लगन होती है इसलिए वे अपने रास्ते में आने वाली बाधाओं को खत्म करने की शक्ति रखते हैं ।

इस वर्ष का विषय है ।

आज़ादी – नई पीढ़ी को सलाम

स्वतत्रंता आन्दोलन के दौरान इन्कलाब–जिन्दाबाद का नारा सुनकर अंग्रेज सरकार थर्रा उठी थी । क्योंकि वह नारा दिया था देश के उन नौजवानों ने जो आजादी के लिए अपनी जान कुर्बान करने को हमेशा तैयार थे । उनकी कुर्बानी सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए नही थी, वो थी देश, गॉव, हर एक परिवार के लिए और आने वाली पीढीयों के लिए ।

एक समय था जब देश के कलाकार, चिन्तक कवि और लेखकों को आज जैसी सुविधायें नही थी, फिर भी चोरी छुपे पोस्टर, बैनर, पर्चे, भाषण, कविता, गीत, कार्टून आदि के जरिये अपनी बात लोगों तक पहुचाते थे और अपनी जान की परवाह किये बगैर लोगो में, आजादी की लडाई में शामिल होने के लिए चेतना जगाई ।

आज के नौजवान क्या जिन्दगी के कुछ पल दूसरे के लिए देने को तैयार है ? देश के हुनरमंदो ,संगीतकार, बुनकर, दस्तकार आदि में लोक कलाकारो की हालत तो और भी खराब है उनके पास अपने लिए भी समय नही है । अपने स्वास्थ्य, परिवार और देश की चिन्ता नही के बराबर है । कई नवयुवक नशे में डूबे हुए है तथा विरासत को भूलते जा रहें है, जो सदियों से उनके जीने का सहारा है, देश की संस्कृतिक धरोहर है, और हमारा गौरव है ।

आज हर कलाकार आजाद तो हैं लेकिन अपनी रुढीवादी रिति–रिवाजों का गुलाम भी है । रीति–रिवाज समाज को जोडने के लिए बने थे पर उन प्रथाओं का दुरुपयोग गलत है ।

यदि इस नई पीढ़ी को हम एक नया माहौल प्रदान करें और उनके विभिन्न कला से जुड़े कार्यो में जैसे कि जजमान, बाजार, तकनीकि ज्ञान आदि की पूर्ण जानकारी एवं साधन मुहैया करायें तो हर हुनरमंद युवा अपनी क्षमता से विकास की इस दोड़ में शामिल हो सकेगा । आज कलाकारों को ऐसी मदद की जरुरत है कि वह खुद अपने पैरो पर खड़ा हो सके ।

आईये हम सब मिल कर इस दिशा में कदम बढायें कि देश की दुर्लभ कला को कैसे जीवित रखा जाये और नई पीढ़ी को कैसे उत्साहित किया जाये । हम अपेक्षा करते है कि आप अपने विचारो से अवगत करायेंगे । सारथी को हमेशा आप के विचारों की प्रतिक्षा रहेगी ।

निमंत्रण

आप एक अनोखा समारोह मनाने के लिए लोक कलाकारों की बस्ती में सादर आमंत्रित है । स्वतत्रंता दिवस की पूर्व संध्या पर पूरी बस्ती को मेले के रुप में बदल दिया जायगा । आप देखेंगे कि परेशानियों से जुझते रहने के बावजूद यहॉ के लोग किस उत्साह और साहस से सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए है

14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोउष्याय जी हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा कलाकारों की को–ऑपरेटिव सोसायटी की नई पीढी को सोपा था । उस दिन से आज तक हम हर वर्ष एक विशेष विषय को लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं । आजादी शब्द जीवन का अन्तिम लक्ष्य स्पष्ट करता है यह सपनों को पूरा करने का सुझाव देता है ।

विनीत

राजीव सेठी

राजीव सेठी.

सारथी– फ्लट न. –4, शंकर मार्किट, नई दिल्ली–110001
दूरभाष न–3315107, 3323744, फैक्स–3314065